IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, October 2024

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

अजीत प्रताप सिंह[1] and डॉ. नवनीत कुमार सिंह[2]
शोधार्थी, विभाग शिक्षा[1]
शोध निर्देशक, विभाग शिक्षा[2]
सनराइज यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'' है। जिसके उद्देश्य में विद्यार्थियों के अन्तर्गत छात्र एवं छात्राओं दोनों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया है। परिकल्पनाओं के अन्तर्गत शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया है। शोध विधि के अन्तर्गत वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद के 10 माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत याद्दच्छिक विधि से चयन कर उसमें अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों जिसमें (200 छात्र एवं 200 छात्राओं) का चयन साधारण याद्दच्छिक विधि से किया गया। अध्ययन में वंचन के मापन हेतु प्रो0 एस0के0 पाल, प्रो0 के0एस0 मिश्र एवं प्रो0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित डी0स्केल एवं विद्यार्थियों के कक्षा 10 की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सम्मिलित किया गया है। अतः निष्कर्षतः पाया गया वंचन का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वंचन की दृष्टि से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए सरकारी नीतियाँ अग्रसर हुई है लेकिन सरकारी नीतियों से ही नहीं समाज, परिवार, विद्यालय आदि की जिम्मेदारियाँ होती है कि वंचन का सही दृष्टि से ज्ञान होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें एवं विद्यार्थियों को वंचन की दृष्टि से उनके शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करते हुए उनके शैक्षिक उपलब्धि का बढ़ाया जा सके।

प्रमुख शब्द - माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, वंचन, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास के साथ-साथ उनके क्षमताओं का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन, जीवन की उदारता, उच्चता सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता, बालक का वैयक्तिक, शारीरिक, मानसिक और भावात्मक विकास करती है। काण्ड के अनुसार ''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है।''

शिक्षा को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे गाँधी जी कहते थे कि हम प्रजातान्त्रिक उद्देश्यों को तब तक नहीं प्राप्त कर सकते जब तक साक्षरता स्तर अपने मानक स्तर को प्राप्त न कर ले। उन बच्चों को मानवीय कसौटी पर हिंसा का शिकार मानते थे जिनको शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया हो। अस्तु गांधीजी ने इस बात पर बल दिया किपप, ''राज्य को '7 से 14' वर्ष के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।''

1950 में भारतीय संविधान के निर्माताओं ने वंचन के दृष्टिकोण से अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान लागू किया जिसमें यह उल्लेख है कि, ''10 वर्ष की अवधि के भीतर सभी बालकों को 14वर्ष की आयु पूरी होने तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाये।''

वंचित होने का अर्थ है- 'रहित होना' या 'विहीन होना'। यदि हम किसी सुविधा से किसी को विहीन कर देते हैं तो वह वंचित हो जाता है। एवांस, (1978) के अनुसार, ''वंचन का तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु को हटा देने या अत्यधिक सीमित कर देने से है, जो वस्तु प्राणी के विकास हेतु अत्यधिक आवश्यक है।''पपप टैनेन बौम (1969) के अनुसार ''वंचन एक ऐसी परिस्थिति है जिसमें विशेष वाह्य एवं आन्तरिक कारक उभरते है, जो व्यक्ति की स्वपूर्ति को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के व्यवहार विकल्पों को सीमित बना देते हैं।''

वंचन का तात्पर्य, ''किसी ऐसी वस्तु को हटा देने या अत्यधिक सीमित कर देने से है, जो वस्तु प्राणी के लिए अत्यधिक आवश्यक है।'' अर्थात् वंचन विद्यार्थियों के गरीबी, सामाजिक-आर्थिक स्तर, शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास में से किसी भी रूप में सुविधारहित होने से है। वंचन, किसी न किसी रूप में बालक या व्यक्ति द्वारा उन सभी सुविधाओं को नहीं प्राप्त कर पाना है जिनकी पूर्ति से वह समाज का एक सुयोग्य नागरिक बनकर स्वयं तथा राष्ट्र का विकास कर सकता है। ''अशिक्षित माता-पिता बच्चों की सुविधारहितता के लिए उत्तरदायी होते हैं।''अ (लेवी एवं रिब्बल 1993)। रामाश्रे राय एक राजनीति शास्त्री मानते है कि, ''वंचन का प्रमुख कारण गरीबी है क्योंकि इसी कारण से शिक्षा ग्रहण करने में व्यक्ति लोगों की अपेक्षा अलगाव महसूस करता है।''अप (सिन्हा, दुर्गानन्द, त्रिपाठी एवं मिश्रा गिरिशवार, 1982)। सामाजिक रूप से वंचित बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति भी प्रभावित होती है। ''सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, October 2024

के अध्ययन मंे पाया गया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के बालकों की तुलना में अच्छी थी।''अपप (सत्यानन्दम 1969)।

प्रस्तुत अध्ययन में वंचन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को देखा गया है जहाँ शैक्षिक उपलब्धि या शैक्षिक प्रदर्शन शिक्षा का वह वाह्य प्रस्फुटन है जिसे कि, ''विद्यार्थी, शिक्षक तथा शिक्षण संस्था अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्राप्त करना चाहते हैं।'' शैक्षिक उपलब्धि को सामान्यतः परीक्षाओं तथा सतत् मूल्यांकन द्वारा मापा जाता है (शर्मा एण्ड अवस्थी, 1977)। शारीरिक कठिनाइयाँ बहुत कम ही सच्ची उपलब्धि का सामना कर पाती हैं। व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ही सच्ची उपलब्धि है। (मैस्लो 1954) शैक्षिक उपलब्धि वह वस्तु या अवधारणा है जिसके माध्यम से यह अनुमान लगाया जाता हैं कि, ''किसी आयु स्तर या कक्षा के बालक के द्वारा उनके लिये निर्धारित जो न्यूनतम लक्ष्य हैं वह उन्हें कितना व किस रूप में प्राप्त कर लिया है या प्राप्त करने हेतु प्रयासरत् हैं।'' (राबिन्सन एण्ड राबिन्सन 1964) ज्यादातर विद्यालय आजकल शैक्षिक उपलब्धि में एसेसमेण्ट वर्क खुली प्रवेश परीक्षा एवं विद्यार्थी द्वारा सम्पूर्ण वर्ष में किये गये कार्य को शामिल करते हैं जबकि प्रवेश प्रक्रिया भ्रष्टाचार का दूसरा रूप है क्योंकि बिना पढ़ाये आप बालक को पूर्व शिक्षा के आधार पर उसके भविष्य का निर्धारण नहीं कर सकते हैं। (मेयर राबर्ट एच0 1994) आज औद्योगिक समाज में शिक्षा एक व्यवसाय के रूप में चलायी जा रही है। समय समय पर शिक्षा को एक व्यवसायिक मानकों की तरह शैक्षिक उपलब्धि की परिभाषा भी बदलती जा रही है जबकि वास्तविक रूप से शिक्षा के लिये आवश्यक है कि, ''बालक के प्राकृतिक गुणों का सर्वोच्च विकास हो ताकि आगे आने वाले जीवन में वह अपने शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक सभी प्रकार के कार्यों को बिना किसी समस्या के कर सकें।'' (लेबिन हेनरी एम0 1979)

वंचन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव विभिन्न शोधों द्वारा इंगित होते हैं।, ''जिसमें शैक्षिक उपलब्धि पर गरीबी का असर, परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ सम्भव हो सकता है।''अपपप (टोबीस सी0 स्टूवी 2007) सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विभिन्न घटकों और 10वीं कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया।पग (गुप्ता एवं लामेरे 2010) सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा बौद्धिक स्तर के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। (गुप्ता, विशम्भर दयाल, 1963)।

साथ ही आर्थिक वंचन से सम्बन्धित कुछ शोधों से इंगित होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों के विद्यार्थी आर्थिक रूप से अधिक अच्छे पाये गये।ग (चक्रवर्ती 1988) आर्थिक स्थिति की कमजोरी बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है जिसमें शैक्षिक उपलब्धि पर आर्थिक कारकों का प्रभाव अधिक पाया गया।गप (अतिफ युसूफ मकीद अलखुतबा 2013) ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, October 2024

अध्ययन का शीर्षक-

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य.

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकत्र्ता ने ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'' को जानने के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या-

प्रयागराज जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, October 2024

न्यादर्श

प्रयागराज जनपद के 10 माध्यमिक विद्यालयों का स्तरीकृत याद्दच्छिक विधि से चयन कर उसमें अध्ययनरत् 400 विद्यार्थियों जिसमें (200 छात्र एवं 200 छात्राओं) का चयन साधारण याद्दच्छिक विधि से किया गया।

उपकरण-

अध्ययन में वंचन के मापन हेतु प्रो0 एस0के0 पाल, प्रो0 के0एस0 मिश्र एवं प्रो0 कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित डी0स्केल एवं विद्यार्थियों के कक्षा 10 की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सम्मिलित किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

उद्देश्य-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर **प्रभाव का अध्ययन-**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी सं0 -1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते हुए एफ-अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	225803.30	112901.65	80.45	F.05(2,397)=3.02
समूहों के अन्दर	397	558515.48	1403.31		
कुल	399	784318.778	114304.96		

*-05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ-अनुपात का मान 80.45 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर 398 पर सारणी मान 3.02 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
IJARSCT
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, October 2024

सारणी सं0 - 1.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	103	347.38	4.61	44.81	9.73	सार्थक
	मध्यम	185	392.18				
2.	उच्च	103	347.38	5.11	62.74	12.27	सार्थक
	निम्न	112	410.12				
3.	मध्यम	185	392.18	4.48	17.93	4.00	सार्थक
	निम्न	112	410.12				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी-मान क्रमशः 9.73, 12.27 एवं 4.00 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि निम्न, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वंचन विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

उद्देश्य-2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन-माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी सं0 -2

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते हुए एफ-अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	116341.78	58170.89	36.66	F.05(2,197)=3.04
समूहों के अन्दर	197	314157.24	1586.65		
कुल	199	430499.02	59757.54		

'.05 स्तर पर सार्थक

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568
ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, October 2024

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ-अनुपात का मान 36.66 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर क त्र2ए 197 पर सारणी मान 3.04 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

सारणी सं0 - 2.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	54	350.19	6.90	50.41	7.31	सार्थक
	मध्यम	87	400.60				
2.	उच्च	54	350.19	7.50	58.70	7.82	सार्थक
	निम्न	59	408.88				
3.	मध्यम	87	400.60	6.72	8.28	1.23	असार्थक
	निम्न	59	408.88				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी-मान क्रमशः 7.31, 7.82 एवं 1.23 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि निम्न, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है, जबकि मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वंचन छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

उद्देश्य-3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन-

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की वंचन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, October 2024

सारणी सं0 -3

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते हुए एफ-अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	115331.01	57665.50	48.25	F.05(2,197)=3.04
समूहों के अन्दर	197	236645.11	1195.18		
कुल	199	351976.12	58860.68		

'.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ-अनुपात का मान 48.25 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर क 197 पर सारणी मान 3.04 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् उनके शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव है।

सारणी सं0 - 3.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	52	345.69	5.96	39.53	6.63	सार्थक
	मध्यम	95	385.22				
2.	उच्च	52	345.69	6.75	65.80	9.75	सार्थक
	निम्न	53	411.49				
3.	मध्यम	95	385.22	5.93	26.27	4.43	सार्थक
	निम्न	53	411.49				

सारणी संख्या 3.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी-मान क्रमशः 6.63, 9.75 एवं 4.43 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि निम्न, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है, जबकि मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक

उपलब्धि में अन्तर नहीं है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वंचन छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् वंचन का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् वंचन का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम एवं निम्न वंचित वर्ग के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है अर्थात् वंचन का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वंचन का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वंचन की दृष्टि से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए सरकारी नीतियाँ अग्रसर हुई है लेकिन सरकारी नीतियों से ही नहीं समाज, परिवार, विद्यालय आदि की जिम्मेदारियाँ होती है कि वंचन का सही दृष्टि से ज्ञान होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें एवं विद्यार्थियों को वंचन की दृष्टि से उनके शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करते हुए उनके शैक्षिक उपलब्धि का बढ़ाया जा सके।

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल (2015). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृ0 5
2. आर.बी.लाल (2012), 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रस्तोगी प्रकाशन मेरठ ;पृ0 328।
3. सुलमान, मोहम्मद एवं कुमार, दिनेश, मनोविज्ञान और सामाजिक समस्याएँ लेवी, डी0 (1943), मैटरनल ओवर प्रोटेक्शन, न्यूयार्क कोलम्बिया।
4. सिन्हा, दुर्गानन्द, त्रिपाठी एण्ड मिश्रा गिरिश्वार (1982). डिप्राइवेशन इट्स सोशल रूट्स एण्ड साइकोलाजिकल कान्सेक्वेंसेज, कान्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, पृ0 3

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, October 2024

5. सत्यानन्दम् (1969). ए स्ट्डी ऑफ साशियो इकोनामिक स्टेट्स एण्ड अचीवमेन्ट, गवर्नमेन्ट कालेज ऑफ एजूकेशन, करनूल।
6. टोबीस सी0 स्टूवी (2007). पावर्टी एण्ड स्कूल एचिवमेण्ट: एन एडिशनल इण्डीकेटर फॉर सोशियो इकोनामिक स्टेट्स इन स्कूल एचिवमेन्ट स्ट्डीज", इंस्टीट्यूट फार स्कूल डेवलपमेण्ट रिसर्च, मैगडालेना बुड्डीवर्ग, इंस्टीट्यूट फार स्कूल डेवलमेण्ट रिसर्च, पृ0 1-15
7. गुप्ता, पी0के0 एवं एबिनिया, लामरे (2010). ए स्ट्डी ऑफ एकेडेमिक एचिवमेण्ट इन रिलेशन टू सेम साइको-सोशल वैरियबल्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन ईस्ट खासी हिल्स मेघालय, डिपार्टमेण्ट ऑफ एजूकेशन, स्कूल ऑफ एजूकेशन, नार्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग।
8. चक्रवर्ती, एस0ए0 (1988). ए क्रिटिकल स्ट्डी ऑफ इन्टेलीजेन्स, सोशियो-इकोनामिक बैकग्राउण्ड ऑफ द फैमिली, एजूकेशनल इनवायरमेन्टल ऑफ द फैमिली एण्ड क्वालिटी ऑफ स्कूल इन चिल्डेन, पी-एच0डी0 एजूकेशन, पूना यूनिवर्सिटी।
9. युसूफ, अतिफ एवं अलखुतबा, मकीद (2013). इम्पैक्ट ऑफ द सोशियो एण्ड इकोनामिक फैक्टर्स ऑफ एकेडेमिक एचिवमेण्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स: ए केस स्टडी ऑफ जोर्डन, इक्सेलेन्स इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड रिसर्च, वाल्यूम-1, इश्यू-4, पृ0 262-272

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/568